नईदुनिया

रेगिस्तानी जमीन भी होगी उपजाऊ, लहलहाएगी फसल

बीजिंग

चीनी वैज्ञानिकों ने एक विशेष प्रकार का बैक्टीरिया विकसित किया है, जो रेगिस्तान की रेतीली जमीन को मात्र 10 महीनों के भीतर उपजाऊ मिट्टी में बदलने में सक्षम है। वैज्ञानिकों की यह सफलता कृषि और पर्यावरण के क्षेत्र में क्रांति ला सकती है। यह अनोखा बैक्टीरिया मिट्टी में कार्बनिक पदार्थों (ह्यूमस) के निर्माण को बढ़ावा देता है, जिससे उसकी जल धारण क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। इसके साथ ही, यह पौधों के विकास के लिए आवश्यक पोषक तत्वों की उपलब्धता को भी सुनिश्चित करता है। प्रयोगशाला परीक्षणों में वैज्ञानिकों ने रेतीली मिट्टी पर इस बैक्टीरिया का छिड़काव किया और चौंकाने वाले परिणाम सामने आए। केवल 10 महीनों के अंदर ही रेतीली जमीन में पर्याप्त मात्रा में ह्यूमस बन गया और वह फसल उगाने लायक उपजाऊ मिट्टी में परिवर्तित हो गई। यह खबर उन तमाम देशों के लिए एक बड़ी उम्मीद बनकर उभरी है, जिनके बड़े हिस्से मरुस्थल या बंजर भूमि से घिरे हुए हैं। इस अविष्कार का उपयोग भारत के थार रेगिस्तान, अफ्रीका के विशाल सहारा रेगिस्तान, मध्य पूर्व के रेगिस्तानी इलाकों और चीन के अपने गोबी रेगिस्तान जैसे क्षेत्रों में किया जा सकता है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि यदि इस बैक्टीरिया को बड़े पैमाने पर सफलतापूर्वक इस्तेमाल किया गया, तो लाखों हेक्टेयर बंजर जमीन को हरियाली से भरा जा सकता है और उसे कृषि योग्य बनाया जा सकता है। चीन के शोधकर्ताओं ने बताया कि यह बैक्टीरिया प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले सूक्ष्म जीवों से प्रेरित है, लेकिन उन्होंने इसे प्रयोगशाला में और अधिक प्रभावी और तेजी से काम करने वाला बनाने के लिए संशोधित किया है। यह सूक्ष्मजीव मिट्टी के कणों को एक साथ जोड़ने में मदद करता है, जिससे मिट्टी की संरचना में सुधार होता है, नमी अधिक समय तक बनी रहती है और सूक्ष्म पोषक तत्व बढ़ जाते हैं। इसके परिणामस्वरूप पौधों की जड़ें आसानी से फैल पाती हैं और उन्हें पर्याप्त पोषण मिलता है। पारंपरिक रूप से, रेगिस्तानी इलाकों में खेती करना बेहद मुश्किल और खर्चीला होता है, क्योंकि इसके लिए भारी मात्रा में पानी, रासायनिक खाद और विशेष तकनीकों की आवश्यकता होती है। लेकिन इस नए बैक्टीरिया से पानी की खपत में भी काफी कमी आने की उम्मीद है, जो वैश्विक जल संकट को देखते हुए एक बड़ी राहत है। वैज्ञानिकों ने यह भी कहा कि यह तकनीक जलवायु परिवर्तन से लड़ने में भी एक महत्वपूर्ण हथियार साबित होगी, क्योंकि बंजर भूमि पर ज्यादा पेड़-पौधे लगाने से वायुमंडल से कार्बन डाइआक्साइड की मात्रा को कम करने में मदद मिलेगी और मिट्टी में कार्बन का भंडारण बढ़ेगा। भारतीय कृषि वैज्ञानिक भी इस अविष्कार पर बारीकी से नजर रखे हुए हैं। यदि भारत इस तकनीक को अपनाता है, तो थार रेगिस्तान के बड़े हिस्से को हरियाली से भर दिया जा सकता है।

न्यूज ब्रीफ

दुबई में भीषण सड़क हादसे में सात भारतीयों की मौत, नौ घायल

दुबई। दुबई में हुए एक दर्दनाक सड़क हादसे में सात भारतीय नागरिकों की मौत हो गई, जबकि नौ अन्य घायल हो गए। भारतीय महावाणिज्य दूतावास ने घटना पर गहरा दुख व्यक्त करते हुए मृतकों के परिजनों के प्रति संवेदना प्रकट की है। दुबई स्थित भारतीय महावाणिज्य दूतावास ने सोशल मीडिया पर जारी बयान में कहा कि सड़क दुर्घटना में कई भारतीय श्रमिकों की मौत की खबर अत्यंत दुखद है। दूतावास के अधिकारी अस्पताल पहुंचकर घायलों से मिले हैं और स्थानीय प्रशासन के साथ समन्वय कर हर संभव सहायता उपलब्ध कराने में जुटे हैं। दुबई पुलिस के अनुसार, यह हादसा उस समय हुआ जब एक मिनीबस सड़क के बीच तकनीकी खराबी के कारण खड़े एक ट्रक से पीछे से टकरा गई। प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि ट्रक अचानक बीच सड़क पर रुक गया था। दुबई पुलिस के यातायात विभाग के महानिदेशक ब्रिगेडियर जुमा सलेम बिन सुवैदान ने बताया कि बस चालक पर्याप्त सावधानी नहीं बरत सका और सुरक्षित दूरी बनाए रखने में विफल रहा, जिसके कारण यह टक्कर हुई। दुर्घटना में सात लोगों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि नौ लोग घायल हुए हैं। घायलों में पांच की हालत गंभीर बताई गई है, जबकि चार अन्य को मध्यम श्रेणी की चोटें आई हैं।

हार्मुज पर नियंत्रण बनाए रखने पर अड़ा ईरान, यूरोपीय संघ के नए प्रतिबंधों की आलोचना

तेहरान। ईरान ने रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण हार्मुज जलडमरूमध्य पर अपना नियंत्रण बनाए रखने की प्रतिबद्धता दोहराते हुए यूरोपीय संघ द्वारा लगाए गए नए प्रतिबंधों की कड़ी आलोचना की है। उसका कहना है कि वह इस महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग पर अपने संप्रभु अधिकारों का प्रयोग जारी रखेगा। ईरान के उप विदेश मंत्री काजेम गरीबाबादी ने यूरोपीय संघ के फैसले को भ्रामक और राजनीतिक कदम करार दिया। उन्होंने कहा कि ईरान इस तरह के कदमों को कोई महत्व नहीं देता और हार्मुज जलडमरूमध्य पर अपनी संप्रभुता बनाए रखने की नीति पर आगे बढ़ता रहेगा। इससे पहले यूरोपीय संघ की विदेश नीति प्रमुख ने बताया था कि सदस्य देशों ने उन कुछ ईरानी व्यक्तियों और संस्थाओं पर प्रतिबंध लगाए हैं, जिन पर जलडमरूमध्य में समुद्री यातायात को सीमित करने में भूमिका निभाने का आरोप है। यह समुद्री मार्ग वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। ईरान और अमेरिका के बीच शांति वार्ता में जारी गतिरोध के बीच हार्मुज जलडमरूमध्य से वाणिज्यिक जहाजों की आवाजाही प्रभावित बनी हुई है। दुनिया के कुल कच्चे तेल व्यापार का लगभग पांचवां हिस्सा इसी मार्ग से होकर गुजरता है, इसलिए क्षेत्र में तनाव का असर वैश्विक ऊर्जा बाजारों पर भी पड़ सकता है।

दुनिया के 10 फाइटर जेट में सबसे ज्यादा ताकतवर अमेरिका का एफ-35 लाइटनिंग-2

वाशिंगटन। आधुनिक युद्ध में हवाई शक्ति का महत्व लगातार बढ़ता जा रहा है। हाल के वर्षों में हुए संघर्षों ने साबित कर दिया है कि किसी भी देश की सैन्य क्षमता का बड़ा आधार उसकी वायुसेना और अत्याधुनिक लड़ाकू विमान होते हैं। स्टील्थ तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित सेंसर, लंबी दूरी तक मार करने वाले हथियार और सुपरक्रूज जैसी क्षमताएं अब लड़ाकू विमानों की ताकत का पैमाना बन चुकी हैं। इसी कारण दुनिया के प्रमुख देश नए और अधिक उन्नत फाइटर जेट विकसित करने की दौड़ में शामिल हैं। एक रिपोर्ट के मुताबिक वर्तमान में दुनिया के सबसे ताकतवर लड़ाकू विमानों की सूची में अमेरिका का दबदबा है। सूची में शीर्ष स्थान पर लाकहीड मार्टिन का एफ-35 लाइटनिंग-2 है, जिसे दुनिया का सबसे सफल पांचवीं पीढ़ी का लड़ाकू विमान माना जाता है। इसकी स्टील्थ क्षमता, सेंसर फ्यूजन और इलेक्ट्रानिक युद्ध प्रणाली इसे बेहद प्रभावशाली है। दूसरे स्थान पर रूस का सुखोई एसयू-57 फेलन है, जो स्टील्थ और उच्च गतिशीलता का बेहतरीन संयोजन प्रस्तुत करता है। तीसरे स्थान पर चीन का चेंगदू जे-20 माइटी ड्रैगन है, जिसने एशिया में चीन की हवाई शक्ति को नई पहचान दी है।

जासूसी से इजराइल-अमेरिका से रिश्तों में आया अविश्वास, कंडीशन क्रिटकल

ट्रंप ने दो टूक कहा था- अब हर कोई इजराइल और नेतन्याहू से नफरत कर रहा

वाशिंगटन

अमेरिका और इजराइल के बीच दशकों पुराने रिश्तों में अविश्वास पैदा हो गया है। वाशिंगटन की एक चौंकाने वाली रिपोर्ट के मुताबिक पेंटागन ने इजराइल की जासूसी गतिविधियों को लेकर अपनी चिंताएं जताई हैं उसने आंतरिक रूप से इजराइल के काउंटर-इंटेलिजेंस खतरे के स्तर को बढ़ाकर क्रिटिकल यानी गंभीर स्तर तक कर दिया है। यह अमेरिकी रक्षा विभाग का सबसे ऊंचा चेतावनी स्तर है। यह फैसला ऐसे समय में आया है जब ईरान के साथ जारी संघर्ष और पश्चिम एशिया की नीति पर अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप और इजराइली पीएम बेंजामिन नेतन्याहू के बीच रणनीतिक मतभेद खुलकर सामने आ गए हैं।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक बर्नर फोन और होटल के कमरों में खामोशी अमेरिकी रक्षा खुफिया एजेंसी द्वारा जारी सात पन्नों के आंतरिक मूल्यांकन दस्तावेज में साफ है कि इजराइल की मानव और तकनीकी खुफिया जानकारी जुटाने की क्षमता बेहद आक्रामक है। आलम यह है कि अमेरिकी अधिकारी अब इजराइल के दौरों पर बहुत डरे और सहमे रहते हैं। सुरक्षा के लिहाज से अब वे अस्थायी कंप्यूटरों, बर्नर फोनों और कड़े सुरक्षा प्रोटोकाल का सहारा ले रहे हैं।

पूर्व राजनयिकों और सुरक्षा विशेषज्ञों का कहना है कि वरिष्ठ अमेरिकी अधिकारी अब इजराइल के होटलों या असुरक्षित कमरों में गोपनीय मामलों पर बात करने से भी कतराते हैं। उन्हें इस बात का डर रहता है कि उनकी बातें रिकार्ड की जा रही हैं। इस जासूसी विवाद के पीछे दोनों देशों के शीर्ष नेताओं के बीच उपजी कड़वाहट है। हाल ही में ट्रंप और नेतन्याहू के बीच फोन पर हुई भी बातचीत बहुत तीखी और तनावपूर्ण रही, जिसमें ट्रंप ने नेतन्याहू को पागल तक कह दिया। जब नेतन्याहू ने बेरूत के दक्षिणी उपनगरों पर फिर से हवाई हमले शुरू करने की धमकी दी, तो ट्रंप का गुस्सा फूट पड़ा।

रिपोर्ट के मुताबिक ट्रंप ने दो टूक शब्दों में कहा कि इसी वजह से अब हर कोई तुमसे नफरत कर रहा है। हर कोई इजराइल से नफरत कर रहा है।

आपरेशन नस्र के तहत ईरान का बड़ा हमला, इजराइली एयरबेस पर दागी बैलिस्टिक मिसाइलें

तेहरान। मध्य पूर्व में तनाव एक बार फिर खतरनाक स्तर पर पहुंच गया है। ईरान ने आपरेशन नस्र के तहत इजराइल के महत्वपूर्ण सैन्य ठिकानों और एयरबेस को निशाना बनाते हुए बैलिस्टिक मिसाइलों की नई खेप दागी है। यह हमला हाल ही में बेरूत में हुए इजराइली हवाई हमलों के जवाब में किया गया बताया जा रहा है। रिपोर्टों के अनुसार, ईरान की ओर से दागी गई मिसाइलों को रोकने के लिए इजराइल की बहुस्तरीय वायु रक्षा प्रणाली सक्रिय कर दी गई। इजराइली सेना ने दावा किया कि अधिकांश मिसाइलों को हवा में ही नष्ट कर दिया गया या वे निर्जन क्षेत्रों में गिरीं। हमले के दौरान उत्तरी इजराइल के कई इलाकों में सायरन बजाए गए और नागरिकों को सुरक्षित स्थानों पर जाने के निर्देश दिए गए। ईरान की इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कार्प्स ने इस कार्रवाई को इजराइल के खिलाफ जवाबी अभियान की शुरुआत बताया है। वहीं इजराइल ने भी कड़ा रुख अपनाते हुए पश्चिमी ईरान और मध्य ईरान में सैन्य ठिकानों पर जवाबी हमले किए हैं। इस घटनाक्रम के बाद पूरे क्षेत्र में युद्ध की आशंका बढ़ गई है। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप सहित कई अंतरराष्ट्रीय नेताओं ने दोनों पक्षों से संयम बरतने और हालात को और अधिक नहीं बिगाड़ने की अपील की है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि यह सैन्य टकराव जारी रहा तो इसका असर पूरे मध्य पूर्व की सुरक्षा और वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति पर पड़ सकता है।

पुतिन के बयान पर चीन की प्रतिक्रिया, भारत प्रतिद्वंद्वी नहीं, बल्कि साझेदार

बीजिंग

बीजिंग ने भारत को अपना स्वाभाविक साझेदार बताकर रूस और भारत के साथ त्रिपक्षीय संबंधों की वकालत की है। यह प्रतिक्रिया रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के हालिया इंटरव्यू के बाद आई है, जिसमें उन्होंने चीन-रूस, चीन-रूस-भारत, रूस-भारत और भारत-पाकिस्तान संबंधों पर चर्चा की थी। चीन ने स्पष्ट किया है कि वह भारत को प्रतिद्वंद्वी नहीं, बल्कि स्वाभाविक पार्टनर मानता है।

चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता लिन जियान ने कहा कि चीन, रूस और भारत तीनों ही तेजी से उभरती हुई अर्थव्यवस्थाएं हैं। इन देशों के बीच अच्छे संबंध बनाए रखना न केवल उनके अपने हित में है, बल्कि यह पूरे क्षेत्र और वैश्विक शांति, सुरक्षा, स्थिरता और समृद्धि के लिए जरुरी है। चीन ने त्रिपक्षीय सहयोग को और मजबूत करने के लिए रूस और भारत के साथ बातचीत जारी रखने की बात कही।

प्रवक्ता लिन जियान ने चीन-भारत संबंधों पर विस्तार से बात की। उन्होंने बताया कि चीन-भारत सीमा पर स्थिति सामान्य तौर पर स्थिर बनी हुई है और दोनों देशों के बीच बातचीत के रास्ते खुले हैं। लिन जियान ने जोर दिया कि चीन और भारत को सही रणनीतिक समझ को बनाए रखना चाहिए कि वे प्रतिस्पर्धी नहीं, बल्कि साझेदार हैं। दोनों देश एक-दूसरे के लिए खतरा नहीं, बल्कि विकास के मौके प्रदान करते हैं। उन्होंने द्विपक्षीय संबंधों को रणनीतिक और दीर्घकालिक नजरिए से देखने, आपसी विश्वास बढ़ाने, सहयोग का विस्तार करने और मतभेदों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने की आवश्यकता पर बल दिया, ताकि चीन-भारत संबंध स्वस्थ और स्थिर रास्ते पर आगे बढ़ सकें।

भारत-पाकिस्तान तनाव पर चीन के रुख पर, लिन जियान ने कहा कि चीन इस मुद्दे पर अपना रुख पहले भी कई बार स्पष्ट कर चुका है। उन्होंने दोनों पक्षों को क्षेत्रीय शांति और स्थिरता बनाए रखने के लिए बातचीत और परामर्श के माध्यम से अपने विवादों को सुलझाने के लिए प्रोत्साहित किया।

अमेरिकी कोर्ट ने एच-1बी वीजा पर लगे 1 लाख डालर का शुल्क रद्द किया

वाशिंगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा एच-1बी वीजा आवेदनों पर लगाए गए 1 लाख डालर के भारी-भरकम शुल्क को अमेरिकी अदालत ने अवैध करार दे दिया है। बोस्टन में यूएस डिस्ट्रिक्ट कोर्ट के जज लियो सोरोकिन ने अपने फैसले में स्पष्ट किया कि यह नीति संसद (कांग्रेस) की ओर से दी गई आवश्यक मंजूरी के बिना एच-1बी याचिकाओं पर टैक्स लगाने जैसा है। अदालत का यह ऐतिहासिक फैसला अमेरिकी तकनीकी कंपनियों में काम करने वाले और वहां जाने की इच्छा रखने वाले भारतीय पेशेवरों के लिए एक बहुत बड़ी राहत लेकर आया है। गौरतलब है कि एच-1बी कार्यक्रम अमेरिका का सबसे लोकप्रिय कार्य वीजा कार्यक्रम है, जो वहां की कंपनियों को वैश्विक स्तर पर कुशल और तकनीकी प्रतिभाओं को नियुक्त करने की अनुमति देता है। पिछले वर्ष सितंबर में राष्ट्रपति ट्रंप ने एक घोषणापत्र पर हस्ताक्षर किए थे, जिसके तहत नए आवेदनों के लिए सालाना 1 लाख डालर का शुल्क अनिवार्य किया गया था। प्रशासनिक अधिकारियों ने इस कदम को अमेरिकी नागरिकों को नौकरियों में प्राथमिकता देने और कंपनियों को प्रोत्साहित करने की पहल बताया था। यह शुल्क आमतौर पर नौकरी देने वाली प्रायोजक कंपनी की ओर से चुकाया जाता है।

चीन ने बनाया छोटे पंखो वाला फाइटर जेट, माइटी ड्रैगन, आसमान से बरसा सकता है कहर

बीजिंग

आसमान में महाशक्तियों के बीच वर्चस्व की जंग लगातार तेज हो रही है, और इस रेस में चीन का सबसे आधुनिक और भारी स्टील्थ फाइटर जेट जे-20 माइटी ड्रैगन इस समय दुनिया भर के रक्षा विशेषज्ञों के बीच कौतूहल का विषय बना हुआ है। इस अत्याधुनिक लड़ाकू विमान की सबसे बड़ी यूएसपी और अनोखी पहचान इसके मुख्य पंखों के आगे लगे दो बेहद छोटे-छोटे पंख हैं, जिन्हें विमानन तकनीक की भाषा में कैनार्ड्स कहा जाता है। आमतौर पर रडार की नजरों से पूरी तरह गायब रहने वाले 5वीं पीढ़ी के स्टील्थ विमानों में इन अतिरिक्त गतिशील पंखों को लगाने से बचा जाता है, लेकिन चीन ने एक बेहद सोची-समझी रणनीति के तहत जे-20 में इस अनूठे डिजाइन को उतारा है। यही वह तकनीक है जो इस भारी-भरकम और विशालकाय लड़ाकू विमान को आसमान में एक हल्के लड़ाकू विमान जैसी अकल्पनीय फुर्ती और रफ्तार प्रदान करती है।

जब बात आमने-सामने की हवाई लड़ाई यानी डागफाइट की आती है, तो जे-20 के ये आगे वाले छोटे पंख युद्ध का पासा पलटने का दम रखते हैं। हवा के प्रचंड दबाव को चीरते हुए ये कैनार्ड्स विमान के अगले हिस्से को पलक झपकते ही किसी भी दिशा में मोड़ने की आजादी देते हैं। इसके दम पर जे-20 दुश्मन के लड़ाकू विमानों की पोजीशन को भांपकर हवा में ऐसी खतरनाक कलाबाजियां दिखा सकता है कि विरोधी पायलट का सटीक निशाना भी चूक जाए। इतना ही नहीं, आधुनिक युद्ध क्षेत्र में जब दुश्मन की कोई खतरनाक गाइडेड मिसाइल जे-20 की तरफ बढ़ती है, तो ये छोटे पंख जेट को अत्यधिक जी-फोर्स को सहते हुए अचानक से रास्ता बदलने में मदद करते हैं, जिससे विरोधी मिसाइल हवा में ही दिशाभ्रमित होकर नाकाम हो जाती है।

एविएशन इंजीनियरिंग के नजरिए से देखा जाए तो चीन ने जे-20 में कैनार्ड्स लगाकर एक बहुत बड़ा तकनीकी जुआ खेला है। अमरीकी रक्षा विशेषज्ञ हमेशा से यह मानते रहे हैं कि स्टील्थ विमानों में जितने ज्यादा गतिशील हिस्से या जोड़ होंगे, वे रडार की तरंगों को उतना ही ज्यादा परावर्तित करेंगे, जिससे विमान के पकड़े जाने का खतरा बढ़ जाता है। यही वजह है कि अमेरिका के एफ-22 रैप्टर और एफ-35 लाइटनिंग जैसे विमानों में कभी भी कैनार्ड्स नहीं दिए गए, क्योंकि अमेरिका पूरी तरह से परफेक्ट स्टील्थ तकनीक चाहता था। इसके उलट, चीनी इंजीनियरों की सोच बिल्कुल अलग थी। चीन को प्रशांत महासागर क्षेत्र में लंबी दूरी तक मार करने वाला एक ऐसा भारी विमान चाहिए था, जिसकी ईंधन क्षमता और हथियार ले जाने की क्षमता (पेलोड) लगभग 11 टन जितनी विशाल हो। इतने भारी विमान को अगर आसमान में फुर्तीला बनाए रखना था, तो पारंपरिक अमेरिकी डिजाइन काम नहीं आ सकती थी। इसलिए चीनी इंजीनियरों ने रडार से बचने की क्षमता यानी स्टील्थ से थोड़ा सा समझौता मंजूर किया, लेकिन जे-20 को कैनार्ड्स देकर सुपर-मैनुवरेबिलिटी (अत्यधिक फुर्ती) से लैस कर दिया।

आयरलैंड में लगता है लाल बाल वालों का अनूठा मेला

डबलिन

हर साल आयरलैंड में एक अनोखा मेला लगता है जिसमे केवल प्राक्रतिक रुप से लाल बाल वालों को प्रवेश मिलता है। इस अनूठे मेले में भाग लेने के लिए दुनिया के कोने-कोने से लाल बालों वाले लोग आयरलैंड पहुंचते हैं। यह मेला मुख्य रूप से ग्रीष्म ऋतु के दौरान आयोजित किया जाता है और यह लाल बालों की दुर्लभता तथा उनकी अनूठी सुंदरता का एक भव्य उत्सव होता है। मेले में आने वाले प्रतिभागियों के लिए कई तरह के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिनमें संगीतमय कंसर्ट, पारंपरिक आयरिश नृत्य, मजेदार प्रतियोगिताएं जैसे रेडहेड ब्यूटी कान्टेस्ट, सबसे लंबी लाल दाढ़ी, सबसे लाल झाइयां, मनोरंजक खेल, पेशेवर फोटोशूट और ढेर सारी अन्य गतिविधियां शामिल हैं। यह एक ऐसा अवसर होता है जहां लोग नए दोस्त बनाते हैं, अपनी अनूठी कहानियां साझा करते हैं और अपने लाल बालों पर गर्व महसूस करते हैं। लाल बाल दुनिया में बेहद दुर्लभ माने जाते हैं। वैश्विक आबादी के केवल 1-2 प्रतिशत हिस्से में ही यह विशेष जीन पाया जाता है, जिसके कारण लाल बाल और अक्सर त्वचा पर झाइयां होती हैं। आयरलैंड में लाल बालों वाले लोगों की संख्या विश्व में सर्वाधिक है, यही वजह है कि यह फेस्टिवल विशेष रूप से यहां मनाया जाता है।

सबसे दिलचस्प बात यह है कि इस फेस्टिवल की शुरुआत एक ब्लोंड (सुनहरे बालों वाले) व्यक्ति ने की थी, फिर भी यह इतना सफल हुआ कि अब हर साल हजारों लोग इसमें शामिल होते हैं। यह मेला सिर्फ मौज-मस्ती और पार्टी तक सीमित नहीं है; यहां लाल बालों वाले लोग अपनी संस्कृति, जीवन की चुनौतियों और अपने खास अनुभवों पर खुलकर चर्चा भी करते हैं। कई प्रतिभागी बताते हैं कि स्कूल या कालेज के दिनों में उन्हें अपने लाल बालों को लेकर अक्सर मज़ाक का सामना करना पड़ता था, लेकिन इस मेले में आकर वे अपनी विशिष्टता पर खुलकर गर्व महसूस करते हैं और एक-दूसरे का समर्थन करते हैं। यह मेला आयरलैंड के एक छोटे से कस्बे में आयोजित होता है, जहाँ का माहौल बेहद उत्साही, रंगीन और मैत्रीपूर्ण रहता है। लाल बालों वाले लोग विशेष कपड़े पहनकर आते हैं, जिनमें अक्सर हरे रंग का प्रभुत्व होता है, जो आयरलैंड का राष्ट्रीय रंग है। कुछ लोग तो पूरे परिवार के साथ इस उत्सव में शामिल होते हैं - बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक, सभी को यहां भरपूर आनंद आता है। सोशल मीडिया पर इस मेले के वीडियो और तस्वीरें खूब वायरल होती हैं, जिससे इसकी लोकप्रियता लगातार बढ़ रही है। लोग कमेंट्स में अपनी इच्छाएं व्यक्त करते हैं जैसे - काश मेरे भी लाल बाल होते, यह दुनिया का सबसे अनोखा फेस्टिवल है, या आयरलैंड की संस्कृति कमाल की है।